नवसम्वत्सर

आचार्य माधव शास्त्री
सोजत

तिथियाँ अनेकानेक होती हैं, जिनमें कल्पादि तिथि और युगादि तिथि शास्त्रगत मानी गई हैं। कल्प के आरंभ तिथि चैत्र मास शुक्ल पक्ष के सूर्योदय से मानी गई है। उसी प्रकार युगादि तिथियाँ चार होती हैं, क्योंकि युग भी चार होते हैं।

1. **सत्ययुग** - कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी,बुधवार,श्रवण नक्षत्र, वृद्धि योग तथा प्रथम प्रहर से सत्ययुग प्रवेश करता है।

2. **त्रेतायुग** – वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया, सोमवार, रोहिणी नक्षत्र,शोभन योग और दूसरे प्रहर से त्रेतायुग प्रवेश करता है।

3. **द्वापर युग** – माघ मास कृष्ण पक्ष अमावस्या, शुक्रवार, धनिष्ठा नक्षत्र, वरीयान् योग और तृतीय प्रहर से द्वापर प्रवेश करता है।

4. **कलियुग** – भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष त्रयोदशी तिथि, रविवार,अश्लेषा नक्षत्र,व्यतिपात योग और अर्द्ध रात्रि से कलि प्रवेश करता है।

ये चार तिथियाँ युगादि तिथि हैं।सम्वत्सर सूर्य गति से होता है परिवत्सर, इडावत्सर, इदवत्सर और वत्सर चन्द्र और बृहस्पति की गति से जाने जाते हैं। साथ ही ईस्वी सन्, विक्रम संवत्, शक संवत् आदि सूर्य की किरणों व गति के आधार पर होते हैं और हिजरी सम्वत् चन्द्र की गति से माने जाते हैं। इनसे भी प्राचीन युधिष्ठिर सम्वत है, जिसे युधिष्ठिर के राज्याभिषेक से मानते हैं। इससे भी पुरातन वैदिक ज्योतिष के अनुसार सप्तर्षि सम्वत होता है जो ध्रुव तथा सप्तर्षियों का सम्बन्ध नक्षत्र मण्डलों के योग से जानते हैं, जिसका एक परिक्रमण 2700वर्ष का होता है, तत्पश्चात् परमेष्ठि का योग ध्रुव तथा सप्तर्षियों के परिभ्रमण से नियंत्रित किया जा सकता है। इसको संसार कहा गया है, यह समय निरन्तर गतिशील है। मनुष्य का जीवन बहुत ही कम है, अतः धर्म को न छोड़ें। धर्मो रक्षति रक्षितः, धर्मो एव हतो हन्ति च संरक्षित धर्म रक्षा करता है और असुरक्षित धर्म सुरक्षित नहीं रखता।